विचार बिन्दु

क्रोध में मनुष्य अपने मन की बात नहीं कहता, वह केवल दूसरों का दिल दुखाना चाहता है। - प्रेमचंद

आयुर्वेद को अवैज्ञानिक कहना व्यक्तिगत अज्ञान की पराकाष्ठा है

पिछले कुछ दिनों से आयुर्वेद और आयुर्वेदाचार्यों के सन्दर्भ में बड़ी अतार्किक, अविवेकपूर्ण और प्रमाण-विहीन टिप्पणियाँप्रिस और सोशल मीडिया में पढ़ने को मिलीं हैं। यह स्थिति चिंताजनक है क्योंकि ऐसी टिप्पणियाँ उन व्यक्तियों द्वारा की जा रही हैं जिनके लिये इस देश के नागरिकों और करदाताओं ने बायो-मेडिकल चिकित्सकीय पढ़ाई-लिखाई और दक्षता विकास में बहुत धन खर्च किया है।

यहाँ एक उदाहरण देखना उचित होगा क्योंकि आयुर्वेदाचार्यों की आलोचना का एक बिंदु यह रहा है कि वे गर्भवती महिलाओं के स्वास्थ्य के संबंध में सलाह देने में सक्षम नहीं हैं। दरअसल, यह बायो-मेडिकल चिकित्सा से जुड़े उनवैज्ञानिकों या चिकित्सकों के अज्ञान की पराकाष्ठा है जिन्हें भारत की मिट्टी में जन्म लेकर भी यह नहीं पता कि 5000 साल पहले से लेकर आज तक आयुर्वेद पूर्णरूपेण और पूरी समग्रता के साथ गर्भधारण (च.शा., 8.4-30), गर्भावस्था, भ्रूण की उत्पत्ति (च.शा., 3.1-17), भ्रूण-विकास, भ्रूण-विसंगतियां (च.शा., 4.7-40), प्रसव, प्रसवपूर्व और प्रसव-पश्चात, प्रसूति प्रबंधन और बच्चे की देखभाल (च.शा. 8.14-64, सु.शा.10.3-70, और का.स. के अनेक अध्याय) में सक्षम है। इसलिये इस बिंदु पर आयुर्वेद या आयुर्वेदाचार्यों की आलोचना उन लोगों का अत्यंत कुतर्कपूर्ण और अज्ञानी व्यवहार है जिनकी चिकित्सा-पद्धित का इतिहास ही200 वर्षों से कम का है। एक दूसरा उदाहरण देखिये। आयुर्वेदाचार्यों को चूरन-चटनी वाले कहकर भी संबोधित किया गया। यह भी अज्ञान की पराकाष्ठा का ही उदाहरण है। यह एक सर्वविदित तथ्य है कि जब अज्ञानी व्यक्ति को अपनी अज्ञानता का अज्ञान रहता है,तो ऐसी अज्ञानताको परा-अज्ञानता या मेटा-इग्नोरेंस कहा जाता है। यह मेटा-इग्नोरेंस केवलविनम्रता और ज्ञान के प्रकाश से मिटेगी, दंभ से नहीं।

वास्तविकता यह है कि आयुर्वेद चिकित्सा पद्धित की जब भी मुखर आलोचना होती देखी गयी है, उसके जड़ में ऐसे आर्थिक, राजनीतिक, व सामाजिक कारण ही रहे हैं जिनका उद्भव प्रतिस्पर्धा से हुआ होता है। इस बार भीआलोचना का कारण इर्ष्या, प्रतिस्पर्धा या व्यक्तिगत समझ का अभाव दिखाई पड़ता है। व्यक्तिगत अज्ञान के अँधेरे में भटकाव भी हो सकता है।प्रबंध-विज्ञान की भाषा में बात करें तो डनिंग-क्रूगर प्रभाव सिद्ध हो रहा है। इस सिद्धांत के अनुसार अज्ञानी स्वयं यह नहीं जानते कि वह कितने अज्ञानी हैं। चार्ल्स डार्विन का वह कथन भीयाद आ रहा है कि ज्ञान की तुलना में अज्ञान प्रायः ज्यादा आत्मविश्वास देता है। समस्या तब और भी बड़ी हो जाती है जब चिकित्सकीय रूप से बहुत पढे लिखे, किन्तु आयुर्वेद के बारे में नासमझ,लोग आयुर्वेद के अवैज्ञानिक होने के कुतर्क देते हैं। असल में समकालीन भारतीय बायो-मेडिकल चिकित्सकों के परिवारों सहित हम सबकी पूर्ववर्ती पीढियाँ 5000 साल तक आयुर्वेद की मदद से ही अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने में सफल रहीं हैं। एलोपैथी कातोजन्म ही वर्ष 1800 से1900 के दौरान हुआ है।आयुर्वेद ने भारत को 5000 वर्षों तक स्वस्थ रखा।

आज यह सर्वविदित है कि स्वास्थ्य बजट का 97 प्रतिशत एलोपैथी को आबंटित करने के बावजूद भारत गैर-संचारी रोगों की वैश्विक राजधानी बनता जा रहा है।ग्लोबल बर्डन ऑफ़ डिसीजेज 2010 के अनुसार इस्चेमिक हार्ट फेलियर, मधुमेह, स्ट्रोक, और अस्थमा के सम्मिलित प्रभाव से होने वाली अकाल-मौतें भारत में 18 प्रतिशत जीवन-काल खा जाती हैं। यह आंकड़ा 1990 के आंकड़ों से दोगुना है। हर वर्ष 58 लाख भारतीय दिल और फेफड़े के रोगों, स्ट्रोक, कैंसर और मधुमेह से मर जाते हैं। विश्व में मधुमेह के 42 करोड़ रोगी हैं। चीन के बाद भारत सर्वाधिक, 6.9करोड़ से अधिक, मधुमेह रोगियों वाला देश होने के कारण मधुमेह की वैश्विक राजधानी कहा जाने लगा है। लगभग 77 लाख लोग मधुमेह से पीड़ित होने की कगार पर हैं।

यही हाल देश के 3 करोड़ से अधिक हृदय रोगियों का है। भारत में कुल होने वाली मृत्य की संख्या में से 60 प्रतिशत केवल गैर-संचारी रोगों के कारण है। देश के अस्पतालों में चिकित्सार्थ भर्ती होने वाले कुल मरीजों में 40 प्रतिशत गैर-संचारी रोगों के होते हैं। स्वाभाविक है कि भारतीय परिवारों, समाज और सरकार को इन बीमारियों की बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। हार्वर्ड मेडिकल स्कूल द्वारा किये गये एक अध्ययन के अनुसार भारतीय अर्थव्यवस्था को वर्ष 2030 के पूर्व गैर-संचारी रोगों के कारण 4.58 लाख करोड़ डॉलर की हानि हो सकती है।

असल में समकालीन भारतीय बायो-मेडिकल चिकित्सकों के परिवारों सहित हम सबकी पूर्ववर्ती पीढ़ियाँ 5000 साल तक आयुर्वेद की मदद से ही अपने स्वास्थ्य की रक्षा करने में सफल रहीं हैं।

विश्व की इस सर्वाधिक प्राचीन चिकित्सा पद्धित, जो आज भी भारत की बहुत बड़ी जनसंख्या के बीच प्रचलन में है, के बारे में यह भी प्रायः सुनने को मिल जाताकि आयुर्वेद का प्रमाण-आधार मजबूत नहीं है, और ना ही इस विषय में बहुत अधिक शोध हुआ है। स्कोपस जो विश्व भर की प्रमुख शोध-पत्रिकाओं में प्रकाशित शोधपत्रों का अग्रणी डेटाबेस है, उसमें आयुर्वेद शब्द को खोजने पर ज्ञात होता है कि लगभग 27,000से अधिक शोधपत्रों में इस शब्द का किसी न किसी सन्दर्भ में प्रयोग किया गया है। यही शब्द गूगल स्कॉलर में खोजने पर लगभग 90,000 से अधिक शोधपत्रों में आयुर्वेद शब्द का प्रयोग हुआ है। आयुर्वेद के आठों अंगों के बारे में पृथक-पृथक देखें तो शोधपत्रों की संख्या 2.5 लाख से अधिक पहुंचती है। इससे भी आगे, आयुर्वेद के मूल ग्रन्थों में जिन वनस्पतियों, द्रव्यों एवं औषधियों का वर्णन है, या जिन व्याधियों का वर्णन है, उन सबको पृथक-पृथक खोजने पर शोधपत्रों की संख्या चार लाख से भी अधिक है। यह आंकड़ा उन लोगों को चौंकाने वाला लग सकता है जो आयुर्वेद में प्रमाण के अभाव का रोना रोते हुये पाये जाते हैं।

आयुर्वेद की केवल एक ही औषधि अश्वगंधा का उदाहरण लेना उपयोगी रहेगा। यह एक महत्वपूर्ण रसायन है। विदानियासोमनीफेरा नामक इस पौधे में 17800 से अधिक शोधपत्र आज तक प्रकाशित हो चुके हैं। विश्व के केवल सर्वाधिक महत्वपूर्ण जरनल्स में देखें, तब भी इस प्रजाति का 6450 शोधपत्रों में कहीं न कहीं सन्दर्भ आया है। एक दूसरा उदाहरण, गुडूची जिसका वैज्ञानिक नाम टिनोस्पोरा कोर्डिफोलिया है, का लेना उपयुक्त होगा। इस औषधीय पादप पर 3500 शोधपत्र केवल सर्वाधिक महत्वपूर्ण शोध-पत्रिकाओं में और लगभग 11,000 शोधपत्र गूगल स्कॉलर डेटाबेस संकलित हैं। इनउदाहरणों से समझा जा सकता है कि प्रमाण खोजने वाले जिस प्रमाण को खोज रहे हैं उसके बारे में उनकी समझ मजबूत किया जाना पहले जरूरी है। शोधपत्रों की इस संक्षिप्त जानकारी, जिसमें हमने आयुर्वेद के 5,000साल लम्बे इतिहास के दौरान लिखे गये आयुर्वेद के अनेकानेक प्राचीन ग्रंथों की बात भी नहीं की है, से एक बात तो बिलकुल स्पष्ट है कि आयुर्वेद के प्रमाण-आधार को समझने में कतिपय एलोपैथी चिकित्सकों द्वारा भारी भूल की जा रही है।

बीमारियों के भू-मंडलीय बोझ, 2015 पर किये गये अध्ययन बताते हैं कि मानव स्वास्थ्य को गंभीर हानि पहुंचाने वाले 30 मुख्य कारक हैं। महत्वपूर्ण बात यह है कि इनमें से एक भी ऐसा कारक नहीं है, जिसे आयुर्वेद के आहार, विहार, स्वास्थ्यवृत्त, सद्वृत्त (देखें, च.सू., अध्याय 5 से8; सु.सू. 20,45,46, सु.चि. 24, सु.उ. 64आदि),रसायन (च.चि., अध्याय 1; सु.चि., अध्याय 27 से 30) या जनपदोध्वंस (च.वि.3.1-52; सु.सू.6.19-20; अ.सं.सू.9.95-142) में वर्णित चिकित्सा के सिद्धांतों से प्रबंधित न किया जा सके। विश्वभर में हुई शोध के अनुसार गैर-संचारी रोगों के जितने जोखिम पहचाने जा सके हैं, और उनमे से जितनी बीमारियों के लिये भारत आज विश्व की राजधानी बनता जा रहा है, उनके लक्षण, बचाव के प्रमाण-आधारित उपाय और समग्र प्रबंध आयुर्वेद में तीस शताब्दियों पूर्व लिखी गयी संहिताओं में उपलब्ध हैं।

किसी विषय के बारे में न जानना एक अलग बात है। विनम्र प्रयत्न से ज्ञान प्राप्त करना कठिन नहीं है। परन्तु सर्वज्ञानी होने का दंभ पालकर किसी विषय को न समझते हुये उसकी आलोचना सिर्फ आत्मघाती ही होती है। छद्मज्ञान का इतना अजीर्ण ठीक नहीं है। अज्ञान का इतना अँधेरा भी ठीक नहीं है। बायोमेडिकल चिकित्सा के साम्राज्य द्वारा आर्थिक-स्वार्थ साधने और मौत की आशंका के बीच चाँदी काटने की जुगत में आयुर्वेद के प्रति इतना विद्वेष भी ठीक नहीं है। आज के शोधकर्ताओं, एलोपैथी चिकित्सकों और तथाकथित स्वयंभू-ज्ञानियों को यह नहीं भूलना चाहिये कि 200 साल पहले एलोपैथी की आधारशिला औषधीय पौधों पर 5000 साल पुराने पारम्परिक ज्ञान पर ही खड़ी की गयी थी।

अंत में स्पष्ट रूप से यह आगाह करना अनिवार्य है कि उपरोक्त निष्कर्ष अतिशयोक्तिपूर्ण, कपोलकल्पित, याआयुर्वेद का रोमांटिक-स्वरूप दिखने के नहीं कहे गये हैं। रोग, निदान, उपचार, बचाव, और औषधियों सहित आयुर्वेद के विविध आयामों पर आजतक प्रकाशित शोध के आधार पर यह जांचा-परखा गया प्रमाण-आधारित दृष्टिकोण है। यह दृष्टिकोण देश में एलोपैथी से जुड़े उन चुनिन्दा वैज्ञानिकों और चिकित्सकों का है जिनके नेतृत्व में भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान में आयुर्वेद पर उच्चकोटि की शोध हो रही है। आयुर्वेद के प्रति यही दृष्टिकोण विश्वविख्यात शख्सियत और भारत के नेशनल रिसर्च प्रोफेसर पद्म विभूषण डॉ. एम.एस. वलिआथन का है जिन्होंने आधुनिक चिकित्सा और सर्जरी में अमेरिका और यूरोप में उच्च शिक्षा ग्रहण किया, टिल्टिंग-डिस्क हार्ट वाल्व डिजाइन किया, और आयुर्वेद की संहिताओं पर ऐसे ग्रन्थ लिखे जिनका डंका विश्व में बज रहा है। भारत को स्वस्थ रखने के लिये आयुर्वेद का ज्ञान आज भी निरंतर उपयोगी है। आयुर्वेद के बारे में व्यक्तिगत अज्ञान आयुर्वेद के अवैज्ञानिक होने का प्रमाण नहीं, अपितु व्यक्तिगत अज्ञान की पराकाष्ठा है। प्रमाण-आधारित तथ्य यह है कि तथाकथित आधुनिक चिकित्सा के कुछ मज़बूत आयामों में सर्जरी और वैक्सीन हैं। किन्तु एलोपैथी के प्रति अंधा और अतार्किक मोह छोड़ कर आयुर्वेद के ढाँचे को सुदृढ किया जाये तो आयुर्वेद आज भी भारत को रोगों की वैश्विक राजधानी होने के कलंक से मुक्त करने में सक्षम है।

-डॉ. दीप नारायण पाण्डेय
(इंडियन फारेस्ट सर्विस में वरिष्ठ अधिकारी)
(यह लेखक के निजी विचार हैं और 'सार्वभौमिक कल्याण के सिद्धांत' से प्रेरित हैं)

कटीले फूल

● **हिण्डौन सिटी : सातवां वेतन आयोग एक जनवरी से लागू करने की मांग।**

अब सरकार सख्त हो गई है जिसने डॉक्टरों की गिरफ्तारी भी करवा दी है वह क्या नहीं कर सकती। अब कर्मचारी शांति से ही मांग रखें।

● **गंगापुरसिटी: पदमावती फिल्म पर रोक की मांग।**

अब यह आग शहरों से गांव कस्बों तक पहुंचने लगी है।

● **भाजपा व डीएमके में बढ़ती नजदीकियां भा रही है दोनों पार्टियों को।**

नए-नए दोस्तों की बातें एक दूसरे को अच्छी ही लगती हैं।

● **इंटरसिटी ट्रेन का इंजन फेल।**

इधर डॉक्टरों की गिरफ्तारी के बाद से अस्पताल की व्यवस्थाएं फेल होने के बाद से फिर से संभलने लगी हैं।

● **राजसमंद : पचास हजार रुपए की रिश्वत लेते पटवारी गिरफ्तार।**

सरकारी नौकरी के लिए खूब पापड़ बेल्या और जब लाग गई तो मिठाई खाबा लाग गया पर अब न मिठाई बची और न ही पापड़ और अब अंदर पापड़ बेलने और पड़ सकते हैं।

● **पायलट बोला माई टाइम इज ओवर जयपुर से दिल्ली नहीं जा सकी फ्लाईट।**

जयपुर में डॉक्टरों की हड़ताल के कारण दवाई नहीं मिलने से आगे जाने की बस की बात ही नहीं रही पायलट की।

अलवर में सत्तारूढ़ दल की एकाएक बढ़ी सक्रियता, चुनावी आहट शुरू

अलवर, (निसं)। अलवर संसदीय क्षेत्र में होने वाले उपचुनाव को लेकर सत्तारूढ़ दल में बेचैनी है। हालांकि उपचुनाव संबंधी अधिसूचना जारी होना अभी बाकी है लेकिन सत्तारूढ़ दल की एकाएक सक्रियता से चुनावी आहट साफ सुनाई देने लगी है।

'राजे सरकार' ने अलवर में पार्टी कार्यकर्ताओं और सभी वर्गों के लोगों से संपर्क व संवाद शुरू कर दिया है। सीएम वसुंधरा राजे के आए दिन के दौरों को उपचुनाव से जोड़कर देखने वाले राजनीतिक पंडितों की मानें तो यह उपचुनाव में सफलता प्राप्ति की दिशा में कवायद है। प्रत्याशियों के नामों पर विचार करने से पहले मुख्यमंत्री राजे चुनाव क्षेत्रों में संपर्क व संवाद के जरिए पार्टी और सत्ता के बारे में लोकधारणा जानने को उत्सुक दिखाई दे रही हैं।

सीएम के दौरों ने पार्टी कार्यकर्ताओं से लेकर जन प्रतिनिधियों और राजनेताओं को सक्रिय कर दिया है।

दूसरी तरफ प्रतिद्वंद्वी राजनीतिक दल कांग्रेस इस उपचुनाव को लेकर अभी उदासीन बनी हुई है। कांग्रेस इस उप चुनाव में या तो जीत को लेकर आश्वस्त है या फिर हार के डर से हताश है। चूंकि यह उप चुनाव देश व प्रदेश की सरकारों की लोकप्रियता की परीक्षा लेने वाला साबित होगा। इसलिए वसुंधरा राजे उपचुनावों में हर संभव तरीके से प्रत्याशियों को जिताकर शासन की चमकदार छवि को बरकरार रखने की जुगत में है।

कुछ माह पहले महंत चाँदनाथ के निधन के बाद अलवर संसदीय सीट खाली हो गई है। अब पार्टी का टिकट पाने के लिए भाजपा नेताओं ने प्रचार युद्ध व जैक-जुगाड़ अपनाने शुरू कर दिए हैं । सत्तारूढ पार्टी ने देश-प्रदेश में कराए गए विकास कार्यों का वास्ता देकर जन समर्थन जुटाने की रणनीति बनाई है। यह चुनाव इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण माना जा रहा है, क्योंकि यह सत्ता की लोकप्रियता का प्रतिशत बताकर आगामी चुनावों के परिणामों पर असर डालेंगे।

- **अलवर सांसद के उप चुनाव को लेकर सत्तारूढ़ दल में बेचैनी**
- **राजे प्रत्याशियों को जिता छवि बरकरार रखने की जुगत में**
- **कांग्रेस या तो जीत को लेकर आश्वस्त है या फिर हताश**

कांग्रेस भाजपा शासन की रीति-नीतियों की मुखालफत करते हुए यह उपचुनाव जीत सत्ताधारी दल को हैरान करने की जुगत में है।

अलवर लोकसभा सीट को महत्वपूर्ण मानते हुए राज्य की सीएम वसुंधरा राजे ने जन समर्थन जुटाने की दिशा में जमीनी स्तर पर प्रयास तेज कर दिए गए हैं।

65 वर्ष के चुनावी इतिहास में अब तक अलवर लोकसभा क्षेत्र से कांग्रेस को सर्वाधिक 10 बार बहुमत से जीत मिली। अलवर लोकसभा क्षेत्र में राजघराने की बहू महेन्द्र कुमारी ने 1991 में चुनाव जीत कर भाजपा का खाता खोला था। 1999 में डॉ जसवन्त सिंह यादव एवं 2014 में महन्त चाँदनाथ भाजपा प्रत्याशी के तौर पर अलवर सीट से चुनाव जीते थे। 1962 का चुनाव एकमात्र उदाहरण है, जब जनप्रिय नेता लाला काशीराम गुप्ता को जीत नसीब हुई। भाजपा टिकट से वंचित किए जाने पर राजपरिवार की महेन्द्र कुमारी निर्दलीय तौर पर अलवर सीट से चुनाव में खड़ी हुई लेकिन उन्हें भी सफलता नहीं मिली। तीसरी शक्ति के रूप में सपा, बसपा, आप और राजपा की ओर से भी चुनाव में प्रत्याशी खड़े किये जा सकते हैं।

अलवर सीट पर कांग्रेस के पास डॉ करण सिंह यादव व भंवर जितेन्द्र सिंह के अलावा कोई दमदार प्रत्याशी फिलहाल नहीं है। जितेन्द्र सिंह अलवर से 2 बार विधायक व 1 बार सांसद रह चुके है। डॉ करण सिंह बहरोड से विधायक व अलवर सांसद रह चुके हैं। अलवर में राजनीतिक ध्रुवीकरण के तहत अहीरवाल, यादव बहुल क्षेत्र मुण्डावर, बहरोड, बानसूर भी प्रत्याशियों की जीत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहा है। वहीं दलित वर्ग के सभी विधानसभा क्षेत्रों में बिखरे मत भी अधिक होने से प्रत्याशियों की हार-जीत का निर्धारण करते हैं।

इधर भाजपा के पास अलवर सीट से चुनाव लडाने के लिए बालकनाथ पूर्व जिलाध्यक्ष संजय शर्मा, श्रममंत्री डॉ जसवन्त सिंह यादव की पत्नी डॉ किरण यादव के नाम चर्चा में हैं। इनके अलावा कई नए चेहरों में से भी किसी को टिकट के लिए चुना जा सकता है। प्रत्याशियों के नाम घोषित होने के बाद ही अलवर की चुनावी तस्वीर साफ होने लगेगी।

मोटर साइकिल अभियान थार टू क्रीकस को दिखाई झंडी

सेना का थार टू क्रीकस अभियान राजस्थान और गुजरात में 260 किमी दूरी तय करेगा।

जोधपुर, (कासं)। सीमा क्षेत्रों के युवाओं को प्रेरित और मार्गदर्शन करने के साथ दूरदराज के सीमावर्ती इलाकों से पूर्व सैनिकों के साथ बातचीत करने के उद्देश्य को लेकर मोटर साइकिल अभियान 'थार टू क्रीकस' आज शुरू किया गया है। इस अभियान को बैक्स एक्स इगल्स द्वारा आयोजित किया जा रहा है, जिसे आज झंडी दिखाई गई।

अभियान में धवन, मुनाबाओ, गडरा, सुगाम, ढोलवीर, कच्छ, रणपक्ष और कोरी क्रीक के रिमोट सीमा क्षेत्रों में 26 सौ किलोमीटर की दूरी शामिल होगी। इस अभियान को को -लेफ्टिनेंट जनरल पीएस राजेश्वर ने कोणार्क स्टेडियम में ध्वजांकित किया। मेजर जनरल ओपी गलिया की अगुवाई वाली 10 सदस्यीय आर्मी टीम मार्ग को 10 दिनों में कवर करेगी।

मोटर साइकिल अभियान 20 नवंबर को शहीद स्मारक, जोधपुर में समाप्त हो जाएगी। कर्नल अमित दीक्षित की अगुवाई वाला अभियान दल, कमांडिंग ऑफिसर, 612 ईएमई बीएन, सभी सहायता प्रदान करेगा और दिग्गजों की समस्याओं को हल करने के लिए पेंशन, स्वास्थ्य, शिक्षा, बैंकिंग, डिजिटलीकरण, बीमा, आधार कार्ड, प्लेसमेंट, पुनर्वास और भर्ती के बारे में जागरूकता फैलाई जाएगी।

जयपुर-दिल्ली हाइवे पर वाहन दबाब घटा, पुलिस बल तैनात

दिल्ली जयपुर एन एच आठ पर दिल्ली में प्रवेश पर लगी रोक के बाद सर्विस लेन पर भारी वाहनों का जमावड़ा लग गया।

कोटपूतली, (निसं)। पिछले 4 दिनों से दिल्ली में अधिक प्रदूषण होने से दिल्ली सरकार ने बाहर से आने वाले भारी वाहनों पर जहां रोक लगा दी वहीं जयपुर दिल्ली हाइवे भी भारी वाहनों के दवाब से मुक्त सा दिखने लगा है।

हांलाकि नेशनल हाईवे आठ पर जगह-जगह भारी मात्रा में पुलिस बल तैनात किये गया है। जो भारी वाहनों को डायवर्ड करने में जुटे हैं।

कोटपुतली व पनियाला थाना पुलिस व जयपुर पुलिस लाईन से आये जवान हाईवे पर निरंतर ग्रस्त कर हाईवे से गुजरने वाले भारी वाहनों को ग्राम कंवरपुरा, गोरधनपुरा सहित सर्विस लेन पर भारी वाहनों को खड़ा करवाया जा रहा है। वहीं पनियाला पुलिस द्वारा भारी वाहनों को हरियाणा की ओर डायवर्ट किया जा रहा है। जहां वाहन चालक यातायात सुचारू होने का इंतजार कर रहे हैं। ऐसे में वाहन चालकों के खाने-पीने की समस्याऐं भी बनी हुई हैं।

आपातकालीन सेवाओं के तहत आने वाले वाहन फल सब्जी, दूध, गैस सहित अन्य वाहनों को दिल्ली जाने में छूट दी जा रही है। पीएचक्यू के आदेश पर जयपुर ग्रामीण एसपी डॉक्टर रामेश्वर सिंह ने भी दिल्ली जयपुर हाईवे पर यातायात डायवर्जन का मौका निरीक्षण कर अधिनस्थों को आवश्यक दिशा निर्देश दिये हैं।

ज़नवाणी

मार्बल पर से जीएसटी हटाएं

जीएसटी के नियम लागू होने के पश्चात मार्बल की खरीद पर उपभोक्ता वर्ग को 28 प्रतिशत राशि अतिरिक्त देनी होगी। सरकार का यह निर्णय सर्वथा गलत है क्योंकि इस अनुचित निर्णय से मार्बल से निर्माण होने वाली सभी धर्मों के भगवानों की मूर्तियां ओर मंदिरों का निर्माण महंगा हो जायेगा क्योंकि भारत में मार्बल की ज्यादा खपत मंदिरों का निर्माण एवं मूर्तियां बनाने में होती है। अतः केन्द्र की मोदी सरकार से मेरा नम्र निवेदन है कि वे मार्बल पर से जीएसटी पूर्ण रूप से हटाकर मूर्तियां एवं मंदिर निर्माण कराने वाले भक्तों को राहत पहुंचाने का धर्म कार्य करें। यदि मार्बल पर जीएसटी लागू हो जायेगी तो भविष्य में जल्दी ही मोदी एवं भाजपा सरकार का पतन निश्चित है।

मोदी सरकार को सत्ता में बने रहना है तो उसे ईमानदारीपूर्वक विदेशों से भारतीयों का काला धन लाकर देश में हजारों लाखों उद्योग धंधे खोलकर लाखों करोड़ों लोगों को रोजगार के साधन उपलब्ध कराने का नैतिक कार्य करना चाहिए। आये दिन महंगाई बढ़ाने के कानून एवं नियम लागू करके देश की आम जनता को ठगने और मंहगाई बढ़ाने का कार्य कदापि नहीं करना चाहिए। जीएसटी के फायदे तो न जाने कब होंगे लेकिन यह निश्चित है कि इसके लागू होने पर मंहगाई में वृद्धि बहुत ज्यादा हो जायेगी। यह कार्य देश की आम जनता के हितों के सर्वता विपरीत होगा।

- नेमीचन्द छाबड़ा, जयपुर

कार्टूनी नज़रिया

हिंदू से साभार

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

रविवार 12 नवम्बर, 2017

मार्गशीर्ष मास, कृष्ण पक्ष, नवमी तिथि, रविवार, विक्रम सम्वत 2074, मघा नक्षत्र, ऐन्द्रयन योग, गर करण, चन्द्रमा आज सिंह राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति : सूर्य-तुला, चन्द्रमा-सिंह, मंगल-कन्या, बुध-वृश्चिक, गुरू-तुला, शुक्र-तुला, शनि-धनु, राहु-कर्क, केतू-मकर राशि में संचार करेगा।

आज मघा नक्षत्र दिन 11.32 तक, ऐन्द्रयन योग रात्रि 12.00 तक है।

इसके पश्चात पूर्वाफाल्गुनी नक्षत्र, वैधृति योग, वाणिजकरण आरम्भ होगा।

आज यमघट योग सूर्योदय से दिन 11.32 तक है। भद्रा रात्रि 12.34 से सोमवार 12.25 तक रहेगी।

आज श्री जम्मोजी पुण्य दिवस (विश्नोई पंथ) है।

श्रेष्ठ चौघड़िया : चर 8.09 से 9.20 तक, लाभ अमृत 9.29 से 12.11 तक, शुभ 1.32 से 2.52 तक।

राहुकाल : 4.30 से 6.00 तक है।

मेष

परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। महत्वपूर्ण मामलों में दुविधा बनी रहेगी। परिवार में वाद-विवाद टालना ठीक रहेगा।

वृष

परिवार में अतिथियों का आगमन हो सकता है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। परिवार में स्वास्थ्य संबंधित परेशानी का सामना करना पड़ सकता है।

मिथुन

नये पुराने मित्रों से मुलाकात हो सकता है। मित्रों के साथ मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। परिवार में शुभ मांगलकि कार्य संपन्न हो सकते हैं।

कर्क

परिवार के कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। अतिथियों का आगमन हो सकता है। सुख सुविधाओं पर धन खर्च हो सकता है।

सिंह

आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। परिचितों के सहयोग से मनोबल बढेगा। परिवार में मौजमस्ती के कार्यक्रम बन सकते हैं।

कन्या

आर्थिक कारणों से परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। धन हानि का भय है। घर गृहस्थी के कार्यों के कारण भागदौड़ बनी रहेगी।

तुला

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। आवश्यक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें।

वृश्चिक

सामाजिक समारोह में भाग लेने का अवसर मिलेगा। शुभ कार्य के लिए यात्रा संभव है। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

धनु

शुभ कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा। आवश्यक कार्यों में व्यवधान सामने आ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

मकर

आवश्यक कार्यों में विलंब हो सकता है। दिनचर्या अस्त-व्यस्त हो सकती है। पारिवारिक कारणों से मन में असंतोष बना रहेगा।

कुंभ

परिवार में प्रसन्नता का माहौल रहेगा। मनोरंजन के कार्यक्रम बन सकते हैं। आपसी सहयोग समन्वय से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है।

मीन

स्वास्थ्य संबंधित चिंता से राहत मिलेगी। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है।